भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान,
खण्डवा रोड, इंदौर-452001

फाइल क्रमांक: प्रेस एवं पब्लिसिटी/प्रेस नोट/ 2021/5 **दिनांक : 17.03.2021**

आईसीएआर-आईआईएसआर के "एग्रीबिजनेस इन्क्यूबेशन सेंटर" का शुभारंभ पर प्रेस नोट

(आईसीएआर-आईआईएसआर द्वारा वर्चुअल मोड से दिनांक: 16 एवं 17मार्च 2021 से आयोजित)

आईसीएआर-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर द्वारा दिनांक 16 एवं 17 मार्च 2021 को आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में सोयाबीन से जुड़े इच्छुक उद्यमीयों के लिए प्रशिक्षण, कौशल विकास तथा स्टार्टअप के लिए सभी आवश्यक जानकारी के लिए प्लेटफार्म के रूप " एग्रीबिजनेस इंक्यूबेशन सेंटर" के शुभारंभ के साथ संपन्न हुई। इस इन्क्यूबेशन केंद्र से सोयाबीन से जुड़े सभी भागीदारो/हितग्राहियों के लिए उन्नत बीज उत्पदान, सोया-खाद्य पदार्थ, कृषि उपकरण और पोषक तत्वों से बीजोपचार युक्त लिक्विड कल्चर जैसी गतिविधियों पर लघु उद्योग स्थापित करने के इच्छुक किसानों, बेरोजगार युवाओं की जरूरतों को पूरा करेगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. टी. आर. शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), आईसीएआर, नई दिल्ली ने देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय द्वारा किये गए आवाहन के उपलक्ष में तिलहनी फसलों पर कार्यरत आईसीएआर संस्थानों द्वारा किये जा रहे स्टार्टअप गतिविधियों के माध्यम से देश को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयासों पर संतोष व्यक्त किया, उनके अनुसार सोयाबीन की खली में उपलब्ध प्रोटीन हाइड्रोलाय्सेट (एक प्रकार का एमिनो अम्ल) का देश में बननेवाले अधिक प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों एवं जैविक खादों को बनाने में उपयोग किया जाना चाहिए. साथ ही इस एग्री बिज़नस इन्क्यूबेशन केंद्र को सफल बनाने हेतु सभी सम्बंधित संस्थाओ के साथ संपर्क-सूत्र को मजबूत किये जाने पर जोर दिया. वर्चुअल मोड से आयोजित इस कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (बौद्धिक सम्पदा एवं प्रौद्योगिकी प्रबंधन), डॉ. संजीव सक्सेना ने भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, इंदौर द्वारा इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए “एक फसल से विविध उद्यम’ बनाये जाने के लिए सोयाबीन पर अपना पक्ष रखा. इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (तिलहन और दलहन), डॉ. संजीव गुप्ता, भी उपस्थित थे जिन्होंने खाद्य तेल उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सोयाबीन फसल के क्षेत्र एवं उत्पादन में वृद्धि हेतु प्रयासों की आवश्यकता दर्शायी.

डॉ। नीता खांडेकर ने इस अवसर पर वर्चुअल माध्यम से उपस्थित अतिथियों एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को पूरा करने में सोयाबीन का अभी तक का योगदान तथा बढती हुयी जनसँख्या को ध्यान में रखकर तिलहनी फसलों के उत्पादन तथा खाद्य तेल की आवश्यकता पूर्ति में आत्मनिर्भरता लाने की आवश्यकता को दोहराया। उन्होंने कहा कि सोयाबीन ने इससे पूर्व मध्य

भारत के लाखों छोटे और सीमांत किसानों के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन में सकारात्मक परिवर्तन लेन में अपनी महती भूमिका निभाई हैं. अब सोयाबीन में उपलब्ध गुणवत्तायुक्त प्रोटीन एवं औषधीय गुणों को देखते हुए इसे दैनंदिन आहार में शामिल किया जाना चाहिए जिससे सोयाबीन को पोषण सुरक्षा हेतु सोयाबीन का दोहन किया जा सके.

इस कार्यक्रम के प्रथम तकनिकी सत्र "आईसीएआर-आईआईएसआर द्वारा विकसित ताकिनिकियों का व्यावसायीकरण" के प्रारंभ में भारत सरकार के कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग द्वारा स्थापित “एग्रीनोवेट इंडिया” कंपनी की मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. सुधा मैसूर, सीईओ (भारत सरकार) द्वारा भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के अन्य संस्थानों में स्थापित किये गए इन्क्यूबेशन केन्द्रों से सम्बंधित यंत्रणा बाबत चर्चा की. साथ ही आईसीएआर-इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च , हैदराबाद द्वारा स्थापित न्यूट्रिहुब कंपनी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. दयाकर राव, द्वारा इस प्रकार के अन्य एग्री बिज़नस इन्क्यूबेशन केन्द्रों की सक्सेस स्टोरीज की चर्चा करते हुए अन्य संस्थानों में इस प्रकार के उपक्रमों को दोहराने की आवश्यकता दर्शायी.

इस तकनीकी सत्र में संस्थान के डॉ. विनीत कुमार (प्रधान वैज्ञानिक) खाद्य गुणों के लिए उपयुक्त विशिष्ट सोयाबीन प्रजातियों से सम्बंधित की गई चर्चा में संस्थान द्वारा विकसित पोषक-रोधी दोनों बाधाओं “ट्रिप्सिन इन्हिबिटर एवं लायपोक्सिजिनेस-2 अम्ल मुक्त प्रथम भारतीय सोयाबीन प्रजाति एन आर सी 142 समेत अन्य उपयुक्त विशिष्ट सोयाबीन प्रजातियों के व्यावसायीकरण के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया. इन विशिष्ट किस्मों के विकास से यह आशा व्यक्त की जा रही हैं की भारत में इन किस्मो से सोयाबीन के खाद्य उपयोगों को बढ़ावा देने साथ-साथ भारतीय रसोई में स्वीकार्यता योग्य हैं । इस तकनीकी सत्र में सोया प्रसंस्करण तकनिकी समेत अन्य विषयों पर आयोजित चर्चा-सत्र में संस्थान की डॉ. नेहा पांडे (वैज्ञानिक , खाद्य प्रौद्योगिकी) द्वारा सोया खाद्य पदार्थों के उपयोग उपयोग के लिए प्रसंस्करण तकनिकी पर चर्चा की। सोया-खाद्य क्षेत्र में उद्यमशीलता की गतिविधियों को बढ़ावा देने के साथ-साथ सोयाबीन से निर्मित प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों को हमारे दैनिक आहार में शामिल करने की आवश्यकता पर जोर दिया। तत्पश्चात डॉ. डी.वी. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक (फार्म मशीनरी एंड पॉवर) जिन्होंने इस संस्थान द्वारा विकसित कई कृषि यन्त्र जैसे बीबीएफ सीड ड्रिल, फर्ब सीड-ड्रिल, स्वीप सीड-ड्रिल, सब-सोइलर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं , ने विगत कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण सोयाबीन की फसल में लगातार आ रही सूखे के स्थिति के बावजूद इन यंत्रो के उपयोग से सोयाबीन के उत्पादन में स्थिरता के स्पस्ट प्रमाण प्रस्तुत किये. इसी प्रकार, डॉ. एम.पी. शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक, माइक्रोबायोलॉजी) तथा एग्री-बिजनेस इनक्यूबेशन सेंटर के प्रभारी ने संस्थान द्वारा सूक्ष्म -जीव आधारित कई पोषक तत्वों समुचित प्रभाव के लिए विकसित लिक्विड कल्चर के बारे में जानकारी डी जिसको बीज उपचार हेतु सोयाबीन की बोवनी के समय आसानी होगी.

दिनांक 17 मार्च को आयोजित एक अन्य तकनीकी सत्र में एग्रीबिजनेस इंक्यूबेशन सेंटर के माध्यम से स्टार्ट-अप के लिए फंडिंग प्रक्रिया बाबत संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गयी, जिसमे एफएसएसएआई आदि जैसे अनुमोदित एजेंसियों से उत्पाद के पंजीकरण और लेबलिंग / ब्रांडिंग और विपणन के लिए नियम और कानून शामिल थे। इस सत्र में नाबार्ड, एमएसएमई जैसी शीर्षस्थ संस्थाओ के अधिकारीयों ने आईसीएआर-आईआईएसआर द्वारा विकसित

तकनीकों के उपयोग से लघु उद्योग/ या स्टार्ट-अप कार्यक्रम जैसी गतिविधियों को पूर्ण रूप देने में सहायता प्रदान करने का वादा किया है। कार्यशाला के आयोजन प्रभारी डॉ. एम्.पी. शर्मा द्वारा सभी संबंधितो को धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ इस कार्यशाला का समापन हुआ। इस अवसर पर संस्थान की कार्यवाह निदेशक डॉ. नीता खांडेकर ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के शीर्षस्थ अधिकारियों को इस संस्थान में " कृषि-व्यवसाय ऊष्मायन केंद्र " आवंटित करने के लिए धन्यवाद दिया तथा आईसीएआर-आईआईएसआर, इंदौर द्वारा किये जा रहे प्रयासों से भविष्य में सोयाबीन की खेती पर आश्रित विभिन्न हितधारकों विशेषकर सोयाबीन उत्पादकों के माध्यम से करोड़ों देशवासियों को पोषण सुरक्षा प्रदान करने में सफलता मिलेगी इस प्रकार की आशा व्यक्त की.

.....